O

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील

केन्द्र क्रमांक की सील

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क – संख्या शब्दों में ~~Three~~ One अंकों में 01

ख – परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 03 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

2009

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [signature]

नाम Sunil Purohit पद S. A.

पता / संस्था M. S. badoragnat

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 402 परीक्षा का विषय Hindi

2. परीक्षा का माध्यम English परीक्षा की दिनांक 13/03/09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें कोड सेट

उत्तर पुस्तिका क्रमांक K 5884078

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

| 1 | 9 | 2 | 1 | 2 | 5 | 7 | 8 | 1 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंक उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

| One | Nine | Two | One | Two | Five | Seven | Eight | One |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।**

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक स

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature] हस्ताक्षर (उपमुख्य

परीक्षक क्रमांक दिनांक.................

## परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

| 1 | 8 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक | आठ | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

## परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

## मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3 | योग पूर्व पृष्ठ | + | पृष्ठ क | = | क

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) राम भक्ति शाखा

(ii) महाफल

(iii) घनश्याम

(iv) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(v) श्रृंगार

2. एक शब्द

(i) चार दिन

(ii) गतिशील

(iii) मितभाषी

(iv) वस्तु बेचने वाले व्यापारिक

(v) आने लहरा तक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

3. ओड़िशा

इस नदी की धार में - दुष्यन्त कुमार

तुम नहीं दीपक नीचे - दिवाकर वर्मा

हर्ष, विस्मय, घृणा, खुशी, शोक, करुणा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। - विस्मयादिबोधक चिन्ह

- सरदार पूर्ण सिंह

मजदूरी और प्रेम

क्षणिक का विलोम शब्द - शाश्वत

4. सत्य व असत्य

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

BSEMP

5. सही विकल्प

(i) संस्कृति की साधना

(ii) आरोग्य नहीं

(iii) दो

(iv) फादरों

(v) श्रम से

उत्तर - 6

"वह देश कौन-सा है"

श्री रामनरेश त्रिपाठी जी द्वारा रचित कविता 'वह देश कौन-सा है' में भारत की प्राकृतिक सौन्दर्यता का वर्णन प्रशंसात्मक शैली में किया है।

यह कविता भारत देश की विशेषताओं का उल्लेख करती है। इस कविता में रामनरेश त्रिपाठी जी भारत की विशालता एवं सम्पन्नता का उल्लेख बड़े ही सरल ढंग से कर रहे हैं। भारत देश एक अत्यंत विशाल एवं समृद्धशाली है। यहाँ प्रकृति में अपने हरा बिखेर रखी है। पृथ्वी पर अगर मानो अगर कहीं स्वर्ग है तो वह सिर्फ भारत में ही है। इस देश में प्रकृति का वह रूप है जो इसे

पृष्ठ के अंकों का योग

स्वर्ग के सदृश कहलाने के लिए उचित है। वे कहते हैं कि भारत के उत्तरी छोर पर हिमालय विराजमान है। यह भारत का मुकुट भारत की रक्षा कर एवं शान बढ़ा रहा है। उधर दक्षिणी छोर पर विशाल समुद्र विराजमान है जो निरंतर भारत के चरणों को धो रहा है। यह भारत की सुंदरता मे चार चाँद लगा रहा है।

भारत में अनेक नदियाँ बहती हैं। ये नदियाँ भारत के प्राकृतिक खजाने को दिखाती हुए प्रतीत होती हैं। यहां सर्वत्र हरियाली छाई हुई है। मानव व जन्तु सभी खुश दिखाई दे रहे हैं। प्रकृति ने मानो सारा खजाना केवल भारत को ही दे दिया है।

भारत ही वह देश है जिसने भारतवर्ष को सर्वप्रथम जगाया। यह ही वह देश है जिसने संसार को शिक्षा दी। यह भारत देश का "शिरोमणि" है। यहाँ अनेक महान पुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने पद-कमलों से यहाँ की धरती को पावन कर दिया है।

अर्थात् इस कविता का यह सार है कि भारत ही वह देश है जो संसार का शिरोमणि है। जो संसार की शान, आन व मान है।

उत्तर-7 "बरखा गीत"

श्री रमानाथ अवस्थी द्वारा लिखित कविता 'बरखा गीत' में कवि ने बड़े ही सुन्दर ढंग से यह बताया है कैसे वर्षा के आगमन धरती प्रसन्नता से खिल उठती है? कैसे

पृष्ठ के अंकों का योग

पृथ्वी आनन्द व सुख का वातावरण फैल जाता है। रमानाथ अवस्थी अपनी विशेष अन्य पीड़ा में डूबे हुए हैं। वे बताते हैं धरती पर वर्षा के आगमन पर क्या-क्या परिवर्तन होते हैं:—

धरती पर वर्षा के आगमन से मनुष्य का जीवन फिर से एक नई उमंग व आस्था के साथ शुरुआत हो जाता है। गर्मी के समय में धरती अत्यधिक ताप से मरुस्थल के समान हो जाती है। पृथ्वी पर हर कहीं सन्नाटा छा जाता है। मानव व जन्तु पीड़ा से तड़पते हैं। परन्तु वर्षा के आगमन पर मनुष्य का जीवन एक बार फिर खिल उठता है। वर्षा निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं—

1. धरती गीली हो जाती है एवं मरुस्थल खत्म हो जाते हैं।
2. पेड़ो पर फिर से नए पत्तों का आगमन हो जाता है।
3. मनुष्य आनन्दित हो उठता है।
4. मनुष्य के सारे विषाद एवं दुख समाप्त हो जाते हैं।
5. हर जगह हरियाली हो जाती है।
6. बंजर जमीन फिर से उपजाऊ हो जाती है।

अर्थात् कवि का यह मत है वर्षा के आगमन पर मनुष्य सभी सुखों से सम्पन्न हो जाता है।

उत्तर-8

"तुम नहीं दीपक बनोगे"

दिनकर जी द्वारा रचित कविता 'तुम नहीं दीपक बनोगे' में दिनकर जी कहते हैं कि आजकल हर जगह विषैला वातावरण फैल गया है। सभी जगह विचारों की बहुलता हो गई जो कभी भी किसी को भी डस सकते हैं। संसार में लोगों के मन बबूल के कांटे उगा

आस है और एक दूसरे को चुभ रहे हैं। सर्वत्र मानवता के सेहने वाले तत्व जन्म ले रहे हैं। मानव ईर्ष्या, द्वेष, जलन से परिपूर्ण हो गया है। मानव को इस अंधकार से निजात दिलाने के लिए कवि का युवा वर्ग पर पूरा विश्वास है। वे कहते हैं मुझे दृढ़ विश्वास है कि युवा वर्ग निश्चित ही मानवता को अंधकार रूपी विषैले वातावरण से मुक्त कराएगा। उसकी युवा वर्ग से निम्नलिखित आशाएँ हैं –

(1) कवि कहते हैं कि युवा वर्ग मानवता को अंधकार में जकड़े होने के कारण अत्यन्त परेशानियाँ उठानी पड़ रही हैं। मानवता घोर अन्धकार में डूब गई है। वे कहते हैं कि युवा वर्ग निश्चित ही अन्धकार से प्रकाशित की ओर ले जाने के लिए दीपक बनेगा जो मनुष्य को प्रकाशित कर देगा।

"है मुझे दृढ़ विश्वास
तुम बनो दीपक बनोगे"

(2) कवि कहता है मनुष्य को आजकल एक-दूसरे से ईर्ष्या हो गई है। इससे उसमें जलन का भाव आ गया है। कवि कहता है कि युवा वर्ग निश्चित ही बासंती हवा बनकर उनके जलन पर ठण्डी हवा की एक झोंक मारेगा जो उन्हें इस जलन से मुक्त करेगी।

(3) कवि कहता कि युवा वर्ग समाज में फैली हुई जलन को मिटाने के लिए निश्चित बीन के समान होगा।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उत्तर - 9

## सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन

उपन्यासरचनाकार यशपाल के द्वारा रचित उपन्यास 'अशोक के हृदय परिवर्तन' में अशोक की निम्नलिखित विशेषताऐं बताई गई हैं —

1. अशोक पर गुणी था। → सम्राट अशोक पर गुणी व्यक्ति था वह दूसरों के गुणों को आसानी से अपना लेता था। वह एक व्यक्ति था जिसने ही अनिता की बातों से इसके गुणों को अपनाया था।

2. वह परम वीर व परम योद्धा था — सम्राट अशोक परम वीर एवं परम योद्धा थे। वे एक महान योद्धा थे। उन्होंने अनेक राज्यों को अपने अधीन किया था।

3. वह स्त्रियों का सम्मान करता था। — सम्राट अशोक एक क्रूर शासक था। परन्तु वह एक व्यक्ति था जो नारियों सम्मान करता था।

4. अत्यन्त क्रूर → सम्राट अशोक अत्यन्त क्रूर था वह अनेकों लोगों को बिना वजह सजा देता है। इसलिए अमिता ने, उसे एक क्रूर शासक की संज्ञा दी।

5. शक्तिशाली शासक → सम्राट अशोक एक शक्तिशाली शासक था वह बहुत बलवान था। उन्होंने अनेक लोगों को हरा कर सारे भारतवर्ष पर अपना कब्जा जमाया था।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पृष्ठ पृष्ठ

उत्तर-17

"गोश्रीनगर से श्रीनगर"

श्री विश्वनाथ अरस्तार जी द्वारा लिखित यात्रावृत्तांत "गोश्री नगर से श्रीनगर" में श्री विश्वनाथ जी बड़े ही व्यंग्यात्मक एवं शालीन ढंग से पूरी यात्रा का वृतांत किया है। वे कश्मीर पहुँचकर कश्मीर के लोगों पर अपनी राय कुछ यूँ लिखते हैं :-

"जिस प्रकार प्रकृति ने कश्मीर की घाटियों में केसर व खेत में अपनी सुगन्ध भर दी है। उसी प्रकार कश्मीर के युवकों-युवतियों में भी प्यार-मुहब्बत की महक है।"

विश्वनाथ जी कहते हैं कि कश्मीर की मिट्टी में प्यार और मुहब्बत की महक है। यहाँ सभी लोग सदा प्रसन्न एवं खुश रहते हैं। यहाँ के व्यक्तियों में सद्भावना एवं सहानुभूति है। ये लोग परस्पर एक दूसरे से प्रेम करते हैं। यहाँ के निवासियों में वह बात है जो भारत के दूसरे भागों में नहीं है। यहाँ तो अलग का अनुभव है। यहाँ अमन, चैन दोस्ती, भाईचारा है। सर्वत्र खुशहाल वातावरण है। मनुष्य एक-दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते हैं। वे एक दूसरे को परस्पर चाहते हैं। प्यार है, मुहब्बत है, अमन है, दोस्ती है भाईचारा है, परस्पर आत्मविश्वास है, खुशी है। तो यह कहना गलत नहीं होगा कि

"कश्मीर की मिट्टी में प्यार-मुहब्बत की महक है"

पृष्ठ के अंकों का योग

(11) [ + ] =

योग पूर्व पृष्ठ अंक

B
S
E
M
P

उत्तर – 11

"योगी अरविन्द"

संकलित प्रेरक प्रसंग "योगी अरविन्द" में योगी जी के जीवन काल का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। इस प्रसंग में योगी जी के व्यक्तित्व पर भी कुछ झलकियाँ डाली गई हैं। इस प्रसंग में योगी जी को एक महान योगमानव के रूप स्पष्ट किया गया है।

इस प्रसंग से ज्ञात होता है कि अरविन्द संस्कारों के धनी थे। वे दिव्य चिन्तक व्यक्ति थे। उनके मुख पर दिव्य तेज था। वह एक महान योगमानव थे। उन्होंने अपने जीवन में योग के मार्ग को चुना। उन्होंने यह ज्ञात हुआ कि आध्यात्मिक जीवन ही ज्यादा बेहतर है। वे सादा जीवन और उच्च विचार वाले व्यक्ति थे।

एक बार की बात है कि योगी जी गंगामठ के स्वामी ब्रह्मानन्द से मिलने गए। स्वामी का नियम था कि वे किसी की ओर देखते नहीं थे। परन्तु जब योगी जी उनके पास आए तो वे उन्हें देखते ही रह गए और एकटक देखने लगे। उन्होंने अपनी दृष्टि योगी के अतिरिक्त कहीं नहीं हटाई। वह तो मात्र योगी जी को देखते रहे। इससे स्पष्ट होता है कि "योगी जी दिव्य संस्कारों के धनी थे।

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर-12

"उपन्यास"

गंगाप्रसाद मिश्र के अनुसार →

"इतिहास की गतिशील पृष्ठभूमि पर एक ऐसा गद्य काव्य जो मानव जीवन के सम्पूर्ण जीवन को प्रदर्शित करता है।"

रामकृष्ण के अनुसार- उपन्यास वास्तविक जीवन की काल्पनिक विधा है।

"अतः उपन्यास कथा का वह रूप है मानव जीवन की यथार्थ को व्यक्त करता है।"

प्रेमचन्द्र जी ने कहा है कि "उपन्यास मानव जीवन का मित्र है।"

अतः उपन्यास कथा साहित्य का वह रूप है जो अपने अन्दर अन्य गौण कथाएँ समेटे रहता है। वह एक विस्तृत रचना होती है। यह मानव जीवन के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित करता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

BSEMP

उदाहरण –

1. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. अशोक का हृदय परिवर्तन – यशपाल

प्रेमचन्द के दो उपन्यासों के नाम –

1. गोदान 2. कर्मभूमि गबन

उत्तर – 13

(क) अन्धों की लाठी – एक मात्र सहारा

वाक्य – भारतीय टीम के सभी बल्लेबाज आऊट हो गए, अब मात्र गेंदबाज ही अन्धो की लाठी है।

पहाड़ टूटना – मुसीबतें आना

वाक्य – श्यामू की माँ का देहांत हो गया एवं उसकी नौकरी भी चली गई, उस पर तो पहाड़ टूट गया।

(ख) लोकोक्ति – लोकोक्ति → लोक + उक्ति

लोक में प्रचलित उक्ति को ही लोकोक्ति कहते हैं। लोकोक्ति शब्द या वाक्यांश का वह रूप है जो किसी घटना या कहानी पर आधारित होती है।

उदाहरण – हाथी के दाँत दिखाने के और करने के और

एक अनार सौ बीमार

पृष्ठ के अंकों का योग

राम नाम की माया कहीं धूप कहीं छाया

उत्तर- 14

(क) फूल - पुष्प, कुसुम
आकाश - नभ, व्योम

(ख) उपकार - अपकार
लाभ - हानि

उत्तर- 15

(क) सूर्योदय - सूर्य + उदय (गुण स्वर सन्धि)
महात्मा - महा + आत्मा (दीर्घ स्वर सन्धि)

(ख) माता-पिता - माता और पिता - (द्वन्द्व समास)
दिन-रात - रात और दिन - (द्वन्द्व समास)

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उत्तर- 16 "संस्कृति"

"संस्कृति शब्द बड़ा व्यापक है। संस्कृति का आशय है "जीवन जीने का ढंग"। संस्कृति शब्द को अनेक लोगों ने परिभाषित किया है परन्तु इसका सार्थक अर्थ अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। संस्कृति एक ऐसा शब्द है जो बहुत व्यापक है। इस शब्द की परिभाषा कुछ यूँ लिखी जा सकती है।

संस्कृति - "संस्कृति वह है जो हम अपनी जिन्दगी में उतारते है। यह मनुष्य के सभी रूपों का मिश्रण है। यह मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार है।"

संस्कृति मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई है। मनुष्य कैसे उठता है क्या करता कैसे बात करता है अथवा कैसा व्यवहार है यह सभी संस्कृति का हिस्सा है। संस्कृति हमें जीना सिखाती है। हमें यह सिखाती है कि हम कैसे अपनी जिन्दगी को जियें।

यह अंग्रेजी के 'culture' का हिन्दी रूप है। इसे जवाहर लाल परिभाषित करते हुए कहते हैं "culture means all round development of humankind" अक्सर लोग सभ्यता एवं संस्कृति में अन्तर नहीं समझ पाते। परन्तु ये दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं।

From my point of view Culture means inner growth in a man. अर्थात् मानव का विकास ही संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ :-

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वोत्तम प्राचीन संस्कृति है। भारतीय संस्कृति विश्व की सभी संस्कृतियों का मिश्रण है। यह सभी संस्कृतियों का मिश्रण भी है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मानव जीवन (भारतीय लोगों) के जीने के ढंग को हम संस्कृति कहेंगे। सो भारतीय संस्कृति में अनेक परम्पराएँ हैं। जन्म से लेकर तक मृत्यु तक भारतीय के सोलह संस्कार होते हैं। अनेक प्रकार के रीति-रिवाज, विवाह के अलग-अलग ढंग, ये सभी भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ हैं।

भारतीय संस्कृति में अनेक धर्म हैं, अनेक जातियाँ हैं। इस कारण भारतीय संस्कृति विश्व की एक संस्कृति है और "संस्कृति ही धर्म का एक हिस्सा है।"

अतः भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन संस्कृति है।
2. यह विश्व की सबसे शक्तिशाली संस्कृति है।
3. यह एक संस्कृति है जहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संस्कार होते हैं।
4. यह संस्कृति धर्म पर आधारित है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

उत्तर – 17

"पायो जी ———————— जस गायो" ।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक वासंती के पाठ 3 "मीरा के दोहे" से ली गई हैं। इसकी रचयिता कृष्ण जी की परम भक्त मीराबाई जी हैं।

प्रसंग → प्रस्तुत पद में मीराबाई जी ने राम रतन की महिमा का बखान किया है। उन्होंने सद्गुरु का भी आभार व्यक्त किया है।

अर्थ :— मीराबाई जी कहती हैं कि उन्होंने राम रत्न रूपी अनमोल व अमूल्य धन की प्राप्ति कर ली है। यह धन उन्हें अपने सद्गुरु की कृपा से प्राप्त हुआ है जिसे उन्होंने स्वीकार कर अपना लिया है। वे कहती हैं कि उन्होंने जनम-जनम की पूँजी अर्जित कर ली है अर्थात् जन्म-जन्मान्तर की पूँजी (धन) प्राप्त कर लिया जो विश्व में बहुत दुर्लभ है। वह इसकी विशेषताएँ कुछ इस प्रकार बताती हैं – कि यह ऐसा धन है कि जो किसी चोर के द्वारा चुराया नहीं जा सकता न ही खर्च हो सकता है बल्कि व्यय करने पर दिन-रात दिन निरन्तर बढ़ता जाता है। वे कहती हैं कि मेरे सद्गुरु ने मुझे संसार रूपी भव सागर से पार कराने के लिए सत्य रूपी नाव दे दी है जिस पर बैठकर मैं इस मोह रूपी दुनिया से तर जाऊँगी। मीरा जी के प्रभु गिरधर नागर जी हैं अर्थात् श्रीकृष्ण जी हैं, वे उनका गुणगान हर्षित होकर कर रही हैं।

विशेष – 1. शब्द चयन प्रशंसा शैली है।
2. भाव माधुर्य पूर्ण है।
3. राष्ट्रगुरु की कृपा का उल्लेख बड़े ही मनमोहक ढंग से किया गया है।

उत्तर – 18

(अ) जीवन विधाता 'माँ'

(ब) मनुष्यों को संसार से परिचित कराने वाला विधाता 'माँ' है

(स) माँ और मातृभूमि दोनों ही स्वर्ग से वन्दनीय है।

उत्तर – 19

(अ) युवा वर्ग 'एक शक्ति'

(ब) युवा वर्ग अनेक कार्य कर सकता है वह युग को नई तस्वीर प्रदान कर सकता है। वह अपनी गर्जना से अपने शत्रुओं का नाश कर सकता है। अतः वह देश की उन्नति में सहायक हो सकता है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

युक्त शत्रुओं के कलेजे चीर सकता है अर्थात उन्हे मारकर अपने देश को बचा सकता है। वह उन्हे परास्त कर सकता है।

उत्तर - 20

स्थानान्तरण प्रमाण पत्र

सेवा मे,
श्रीमान प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टीकमगढ़
मध्यप्रदेश (म.प्र.)

विषय - प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु

महोदय,

मैं कक्षा दसवी का छात्र हूँ। मैं आपके विद्यालय का एक छात्र हूँ। कुछ दिनो पहले मेरे पिताजी का स्थानान्तरण टीकमगढ़ से ग्वालियर हो गया है। मेरे पिताजी एक शासकीय कर्मचारी है। मुझे खेद है कि मुझे बीच मे ही पढ़ाई छोड़कर जाना पड़ेगा।

अतः आपसे यह निवेदन है कि कृपया मुझे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र देने की कृपा करे। जिससे मैं नए विद्यालय मे दाखिला ले सकूँ।

आशा करता हूँ कि आप मुझे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र अवश्य शीघ्र प्रदान करेंगे।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग

धन्यवाद।

आपका सर्वदास
शिक्षक
अ. ब. स.

दिनांक
19/03/2009.

उत्तर - 23.

निबंध

जीवन में खेलों का महत्व

रूपरेखा - स्वयं का मत

1. प्रस्तावना
2. खेलों के प्रकार
3. खेलों का महत्व
4. भारत में खेलों की दशा
5. खेल न खेलने से हानियाँ
6. मानव जीवन और खेल
7. उपसंहार

प्रस्तावना :-

जीवन स्वयं एक खेल है जहाँ निरन्तर खिलाड़ी आते हैं और जाते हैं। इस खेल में मनुष्य विभिन्न प्रकार के रूप धारण करता है। अन्त में इस खेल को छोड़ देता है। यही बात यहाँ बताना

पृष्ठ के अंकों का योग

आवश्यक है कि खेल क्या है? खेल वह है जो मनोरंजन, स्वास्थ्य के लिए खेला जाता है। वह मानव जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। खेलों की महत्ता जीवन में बहुत अधिक होता है।

मनुष्य अपने कामों में इतना उलझ गया है कि उसे खेलों की फुर्सत नहीं है। वह तो विभिन्न प्रकार के कार्यों में उलझा रहता है। इसी कारण आज मानव विभिन्न प्रकार की बीमारियों से घिर चुका है। इसलिए कहा जाता है कि

'All work and no play makes Jack a dull boy' अर्थात् निरन्तर काम करते रहने से मनुष्य का जीवन बेजान व अस्थिर हो जाता है। मनुष्य विभिन्न समस्याओं से घिर जाता है। इसलिए आवश्यकता है "खेल खेलो।

मानव को जरूरत है कि वह आज खेल खेले। एवं अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाऐं।

2. खेलों के प्रकार :- खेलों के अनेक प्रकार हैं। विभिन्न प्रकार के खेल आजकल बच्चों, बूढ़ो द्वारा खेले जाते हैं। खेल मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - 1. इंडोर गेम 2. आउटडोर गेम

इंडोर गेम वह खेल है जिसमें खेल मैदान के बजाय एक बंद जगह में खेला जाता है। जैसे:- कैरम, टेबिल टेनिस, स्केटिंग आदि। आजकल लोग इंडोर गेम्स में कम भाग लेते हैं। ये तो घर पर ही बच्चों द्वारा खेले जाते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

खेल के दूसरे प्रकार का नाम है आउटडोर गेम्स। है खेल मैदान मे खेले जाते है। लोग मैदान मे इन खेलो का अभ्यास करते है जैसे क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल आदि।

खेलों का महत्व →

According to Swami Vivekanand.

"हे मानवों खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। ये मनुष्य को स्वर्ग तक ले जाने वाली चीज है। इसलिए मैं कहता हूँ कि धर्म की पुस्तक पढने के बजाय तुम एक बार फुटबाल खेलो, तुम स्वर्ग के ज्यादा नजदीक होगे।"

स्वामी जी का यह कथन अपने आप मे आश्चर्यजनक है। परन्तु यह एक सत्य है। मनुष्यों को खेल से अनेक लाभ होते है। मनुष्य खेल-खेलकर जीवन की किसी भी चुनौती से तैयार रहता है। वह अपनी खेल खेलने की शक्ति से लड़ने की अनेक रीतियाँ आ सकता है। मानव खेल-खेलकर ही जीवन के विभिन्न पहलुओं को जान पाता है। वह खेल खेलने से जीतने की शक्ति, Lead करने की शक्ति, co-operation का भाव, determination आदि चीजों को अपने अन्दर विकसित करता है।

मानव खेल से ही जीवन को जी सकता है। खेल खेलने से ही मानव का शारीरिक व मानसिक संतुलन ठीक रहता है। चेहरे पर कांति आती है, शरीर संतुलित होता है। मनुष्य जीवन का भाव सीखता

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

है। इससे मनुष्य अपने अन्दर विभिन्न चीजों को विकसित करता है।

कहा जाय तो खेल से धन लाभ होता है। लौकिक मत। यह सत्य है। खेल से ही मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है और संतुलित रहता है। और कहा गया है —

"Health is wealth"

सचमुच खेलों का महत्व अवर्णनीय है।

भारत में खेलों की दशा → कहा जाय तो भारत में खेलों की दशा कुछ ठीक नहीं है। यहाँ सुविधाओं का अभाव है। मनुष्य जीवन में खेल महत्वपूर्ण है परन्तु भारत में इन्हे महत्व नहीं दिया जाता।

उदाहरण के तौर पर— छोटा बच्चा जिद्द करता है कि मुझे खेलने जाना है परन्तु माँ-बाप कहते हैं कि बेटा अभी नहीं। अभी कमरे में जाकर पढ़ो। जाओ पढ़ाई करो। इस पर बच्चों को अन्दर बैठना पड़ता है। सो बच्चा धीरे-धीरे यह भाव develop कर लेता है कि खेलना महत्वपूर्ण नहीं है। सो बस फिर वह आगे की पीढ़ी को भी यही शिक्षा देता है। हो गया न सत्यानाश।

"So, हे मम्मी, हे पापा आगे-आगे बच्चे को जगाओ, खेल-खेलने तुम उसे मनाओ।"

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

खेल न खेलने से हानियाँ →

खेल नहीं खेलने में मानव जीवन बिन सावन बरसात बिन रंग पेंटिंग और बिना आत्मा के मानव का शरीर है।

इसलिए मानव जीवन में खेल बहुत आवश्यक है। खेल न खेलने वाले सदा पीछे छूट जाते हैं। मनुष्य हमेशा ही खेलता रहा है। इसलिए आज इस पृथ्वी पर है। यदि मान लीजिए खेल न हो तो फिर मानव जीवन नीरस हो जाएगा।

"खेल न खेला
सो न घूमा जिंदगी का मेला"

मानव जीवन और खेल →

मानव जीवन और खेल का रिश्ता अत्यंत पुराना है। मनुष्य प्राचीन काल से ही खेलता आया है। और अब भी खेल रहा है। यह मानव जीवन के लिए एक वरदान है। यह जिंदगी का एक अभूतपूर्व रूप है। यह मानव जीवन की सबसे अच्छी कृति है। मैं तो उस व्यक्ति (भगवान) को धन्यवाद दूंगा। जिसने खेल बनाए। क्योंकि मानव जीवन में खेलों के बिना तो सबकुछ अधूरा है। मनुष्य अधूरा है। जो जरूरत है उसे बचाए रखने की और उसका विकास करने की।

मानव जीवन और खेलों का रिश्ता सदा बना रहे।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

4 पृष्ठ

# माध्यमि[illegible]ल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील केन्द्र क्रमांक 212023
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक [signature] 19-03-09
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील [signature]
4. केन्द्र क्रमांक हाई स्कूल परीक्षा
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम English
8. दिनांक 19/03/2009

पृष्ठ

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

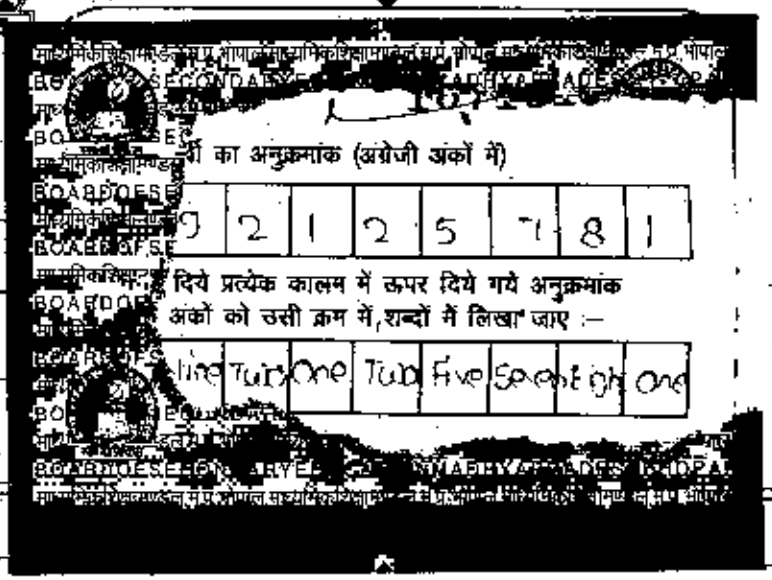

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

| 9 | 2 | 1 | 2 | 5 | 7 | 8 | 1 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में, शब्दों में लिखा जाए :-

| Nine | Two | One | Two | Five | Seven | Eight | One |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

B S E M P

उपसंहार -

ज्ञात होता है कि खेल बहुत आवश्यक है। खेल मानव जीवन वृद्धि को विकसित करता है। यह मानव जीवन को खुशहाल व समृद्ध बनाता है। यह मानव जीवन का अंतर्गत महत्वपूर्ण अंग है। जरूरत है कि इस (खेल) सम्पदा को बचायें। उसका नाश न होने दें। उसका निरंतर उपयोग दें। खेल एक ऐसा वायुयान है जो हमें हवा में तो ले जाता है परन्तु कभी भी गिरा सकता है। क्योंकि आजकल लोग खेल ही खेलते रहते हैं जिससे उसका शारीरिक और मानसिक नुकसान होता है। अतः खेल खेलो परन्तु लिमिट में।

कहा गया है -

हँस-हँस तुम खेलना सीखो, खेल-खेल कर हँसना।
हँसते-हँसते कट जायेगी जिन्दगी, खेलते-खेलते मत रुकना॥

पृष्ठ के अंकों का योग

Al
103

पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

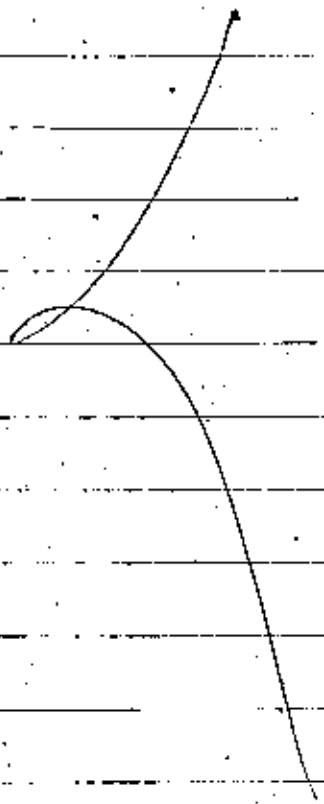

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP